सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका

परिचय

सशस्त्र बल किसी देश की सुरक्षा, स्वतंत्रता और सम्मान का प्रतीक होते हैं। लंबे समय तक यह क्षेत्र केवल पुरुषों का था। लेकिन अब महिलाएं भी इस क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं और इतिहास रच रही हैं। आज महिलाएं केवल सहायक भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे युद्ध, रणनीतिक कार्य, तकनीकी मिशन और उच्च नेतृत्व पदों पर भी काम कर रही हैं। यह बदलाव न केवल महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रगति दर्शाता है, बल्कि रक्षा बलों में विविधता और दक्षता की जरूरत को भी दिखाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में महिलाओं को पहली बार 1992 में शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत सशस्त्र बलों में शामिल होने की अनुमति मिली। बाद में, 2016 में भारतीय वायु सेना ने पहली बार तीन महिलाओं— अवनी चतुर्वेदी (मध्य प्रदेश), भावना कांत (बिहार), और मोहना सिंह (राजस्थान)— को लड़ाकू विमान उड़ाने की छूट दी। ये महिलाएं इतिहास रचीं और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन गईं।

आज महिलाएं भारत की सेना, नौसेना और वायु सेना के सभी तीनों बलों में काम कर रही हैं और उच्च पदों पर भी बनीं हैं। 2020 में सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को समान अधिकार देते हुए स्थायी कमीशन का अधिकार दिया। इससे पहले वे केवल 14 वर्षों तक ही सेवा कर सकती थीं। स्थायी कमीशन मिलने से वे कर्नल व उससे ऊपर के पद तक पहुँच सकती हैं। 2023 में भारतीय नौसेना ने पहली बार युद्धपोतों पर महिला अधिकारियों को तैनात किया। अब महिलाएं देश के समुद्री सीमा की सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं को अग्निपथ योजना में भी शामिल किया गया है, जिसके तहत वे चार वर्षों के लिए सेना में सेवा देकर राष्ट्रीय सेवा में योगदान दे सकती हैं।

पैरामिलिट्री बलों में महिलाएं

सशस्त्र बलों के अलावा, भारत की पैरा मिलिट्री बलों — बीएसएफ, सीआईएसएफ, सीआरपीएफ, आईटीबीपी, और एसएसबी में भी महिलाएं सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

बीएसएफ में महिलाएं सीमा सुरक्षा, गुप्तचर संचालन और तस्करी रोकथाम में काम करती हैं। सीआईएसएफ महिलाओं को हवाई अड्डों, मेट्रो स्टेशनों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा के लिए तैनात करता है। सीआरपीएफ में महिलाएं कानून-व्यवस्था संभालने, सशस्त्र संघर्ष और अभियान कार्यों में लगी हैं। आईटीबीपी में महिलाएं भारत-चीन सीमा के ऊंचे इलाकों में तैनात हैं। एसएसबी, जो भारत-नेपाल और भारत-भूटान सीमाओं की सुरक्षा करता है, में भी महिलाएं सेवाओं में शामिल हैं।

इन पैरा मिलिट्री बलों में महिलाओं के शामिल होने से न केवल कार्य क्षमता बढ़ी है, बल्कि स्थानीय समुदायों, खासतौर पर महिलाओं और बच्चों के साथ रिश्ते भी मजबूत हुए हैं।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

अमेरिका, इजरायल, फ्रांस और कनाडा जैसे देशों में महिलाएं पूर्ण लड़ाकू भूमिका में हैं। इजरायल में महिलाओं के लिए सैन्य सेवा अनिवार्य है। अमेरिका ने 2013 में सभी लड़ाकू पद महिलाओं के लिए खोल दिए। भारतीय महिला जवान संयुक्त राष्ट्र की शांतिरक्षा अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी हैं, जिससे स्थानीय लोगों के साथ विश्वास बना है।

मुख्य चुनौतियां

महिलाओं का सैन्य क्षेत्र में सफर आसान नहीं रहा है। सामाजिक पूर्वाग्रह और लैंगिक भेदभाव अब भी बड़ी बाधाएं हैं। अक्सर लोगों को महिलाओं की क्षमताओं पर शक होता है। परिवार और सैन्य सेवा के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के लिए कठिन होता है। महिलाओं के लिए उचित सैन्य सुविधाओं का अभाव भी उनकी भागीदारी को सीमित करता है।

कुछ प्रमुख चुनौतियों में असमान शारीरिक फिटनेस मानक, यौन उत्पीड़न की घटनाएं, और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं से महिलाओं को अलग रखना शामिल है। 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाएं कुल सशस्त्र बलों का केवल 0.56% हैं, जो यह बताता है कि अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

भविष्य की संभावनाएं

आगे जाकर महिलाओं की सैन्य भूमिका और बढ़ सकती है। युद्ध का स्वरूप बदल रहा है—अब साइबर युद्ध, ड्रोन संचालन, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी जैसे क्षेत्र शारीरिक ताकत से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। महिलाएं अपनी तकनीकी दक्षताओं के कारण इन क्षेत्रों में स्वाभाविक रूप से अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं।

यदि सरकार लचीले सेवा नियम, महिला-केंद्रित प्रशिक्षण, बेहतर सुविधा और मार्गदर्शन कार्यक्रम लागू करती है, तो और अधिक महिलाएं सशस्त्र बलों में स्थायी करियर बना सकती हैं। रक्षा मंत्रालय की "डिफेंस जेंडर इंक्लूजन पॉलिसी" पर विचार करना इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

निष्कर्ष

सशस्त्र बलों में महिलाओं ने बहादुरी, नेतृत्व और कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उनका योगदान भारत के सामाजिक विकास और सैन्य शक्ति दोनों का प्रतीक है। एक मजबूत और संतुलित सैन्य बल के लिए महिलाओं की समान भागीदारी आवश्यक है। इसके लिए नीतियों, समाज और संस्थागत सोच में बदलाव जरूरी है। महिलाएं न केवल सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम हैं, बल्कि वे रक्षा नीति, शोध, रणनीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग में नेतृत्व देने के लिए भी तैयार हैं।

TotalExam™